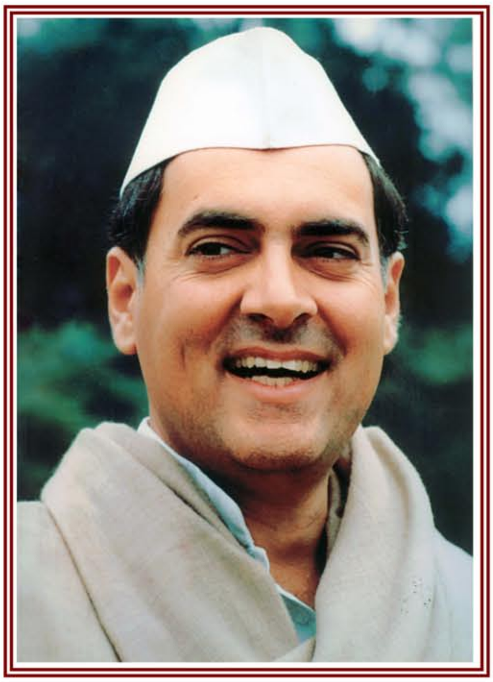

राजीव गाँधी... एक सम्पूर्ण जीवन

श्री राजीव गाँधी 31 अक्टूबर 1984 को अपनी माँ इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद भारत के प्रधानमंत्री बने। उनकी आयु 40 वर्ष थी। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय शोक की इस घड़ी में उन्होंने नेतृत्व की चुनौती स्वीकार की और स्वयं को आहत राष्ट्र को स्वाथ्य बनाने की नई आशा जगाने के काम में पूरी तरह समर्पित कर दिया। दो महीने बाद भारत के लोगों ने आजादी के बाद का सबसे बड़ा जन आदेश उन्हें दिया।

राजीव गाँधी में एक युवक की ऊर्जा और एक सुधारक की दूर–दृष्टि थी। वे आधुनीकरण के ऐसे अगुवा थे जिन्होंने इस युग की वैज्ञानिक तकनीकी और प्रगति का समन्वय, भारत की सदियों पुरानी संस्कृति और इतिहास में करने का प्रयत्न किया। वे इस बात को समझते थे कि जनतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के बिना भारतीय समाज संकटग्रस्त हो जायेगा, शिक्षा और आर्थिक विकास के अभाव में गरीबी बनी रहेगी एवं राजनैतिक एकता तथा अखण्डता के अभाव में भारतीय राष्ट्र शक्तिशाली नहीं बन सकेगा।

प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गाँधी का कार्यकाल, प्रगति और परिवर्तन का युग था। देश के कई हिस्सों में जहाँ मुठभेड़ और हिंसा फैली थी उन्होंने शांति पहुँचाई। गरीबी की कमर तोड़ने के लिए उन्होंने रोजगार पैदा करने वाले नये कार्यक्रम आरंभ किये और विज्ञान एवं तकनीकी को गरीबों की सेवा के काम में लगाया। अपना भविष्य खुद गढ़ सकने के जन–जन को सोपने के लिये उन्होंने राजनैतिक सुधार आरंभ किये एवं पंचायती राज तथा स्थानीय प्रशासन की नई संस्थाओं की कल्पना की। पिछड़ेपन से संघर्ष करने के लिये उन्होंने साक्षरता, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में नई राह तलाशी। उनका मानना था कि सभी भारतवासी चाहे उनका धर्म, जाति और भाषा कुछ भी हो, समान है। सबको अपनी जिन्दगी ऐसे सवारने का अधिकार है वे भूख, भ्रम और अभाव से मुक्त हो वे अपने सम्पूर्ण समर्थ का विकास कर सके।

राजीव गाँधी पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखते थे। स्वदेश में उन्होंने समानता के लिए और अंतराष्ट्रीय समुदाय में नवजीत व्यवस्था के लिये अथक प्रयास किया। वे गुट निर्पेक्षता, अहिंसा व निःशस्त्रीकरण के मुखर पक्षधर, रंग भेद के विरूद्ध एक समर्थक योद्धा थे और पर्यावरण की रक्षा के लिये एक पुरजोर अभियानकर्ता थे तथा विकासशील देशों के अधिकारों के लिए उनका स्वर प्रमुख रहा।

राजीव गाँधी का राजनैतिक जीवन हत्या की छाया में व्यतीत हुआ पर वे सच्चे साहसी थे और वे सदैव अपने कर्तव्यपक्ष तथा अपने सिद्धांतों पर अटल रहे। 21 मई 1991 में जब उनकी आयु 46 वर्ष भी नहीं हुई थी उनका निधन श्रीपेरूम्बुदूर, तामिलनाडु में एक आतंकवादी बम से हुआ। उनका देहांत भी वैसे ही था जैसे उनका जीवन–होठों पर मुस्कान लिये और हृदय में करूणा।